पाठ 6

संत कँवरराम

सनातन काल से भारतवर्ष के संत–महात्माओं, ऋषि–मुनियों, योगी–वैरागियों ने अपने कर्म–धर्म व साधना से सृष्टि का न केवल शृंगार किया अपितु मानवता के कल्याण के अद्‌वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए। भारत भूमि और उस पर स्थापित हमारे समाज ने उनका अनुसरण करते हुए सभ्य, संस्कारित व सर्व हितकारी जीवन यापन करने के अवसर प्राप्त किए हैं। भारत भूमि को संत और संतत्व की ईश्वर प्रदत्त अनूठी देन है जिसके रहते ही भारत विश्व गुरु के रूप में स्थापित हो सका।

'संत' एक अभूतपूर्व व्यक्तित्व–कृतित्व से भरे–पूरे होते हैं जो अपने जीवन में अर्जित ज्ञान, तपस्या, साधनामय शरीर समाज और उसके जरूरतमंद हिस्सों को समर्पित करना ही जीवन का लक्ष्य मानते हैं, ऐसे ही एक संत अखंड भारत के सिंध प्रांत में प्रतिष्ठित रहे हैं जिनका नाम था–संत कँवरराम।

सिंध प्रांत के सक्खर जिले में जरवारन गाँव में 13 अप्रेल, 1885 को माता तीरथ बाई और पिता ताराचंद के घर जन्मे कँवरराम बाल्यकाल से ही साधु स्वभाव के थे। उन्होंने संगीतज्ञ गुरु हासाराम से गायन–वादन की शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की। कालांतर में कँवरराम अपने गुरु सतराम दास के सान्निध्य में रहे। उनकी सेवा–शुश्रूषा से उनके व्यक्तित्व में अनोखे बदलाव से संतत्व उतर आया। वे सादगी, सेवा, परोपकार व विनम्रता की प्रतिमूर्ति बन गए। संत अपनी झोली में आई धन–सामग्री गरीब विधवाओं व विशेष योग्यजनों में बाँटते और जनहित में ही खर्च करते थे। वे दूसरों के बारे में ही सोचते रहते थे। अपने जीवन का गुजारा चलाने के लिए वे प्रतिदिन माँ के हाथों से बने कुहर (उबले चने, मूँग, चावल) बेचते थे।

इससे प्राप्त आमदनी से अपना व परिवार का भरण–पोषण करते थे। इनका विवाह मधराझ गाँव के जमींदार नोतूमल की सुपुत्री काकनि बाई के साथ सन् 1903 में संपन्न हुआ। संत कँवरराम के जीवन आदर्शों से प्रभावित होकर काकनि बाई भी समाज सेवा में संलग्न हो गई। काकनि बाई की कोख से एक पुत्र पेसूराम और दो पुत्रियों ने जन्म लिया। लगभग छब्बीस वर्षों तक काकनि बाई ने इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा कार्य किया। भोजन–भंडारे की व्यवस्था काकनि ही संभालती थी। सन् 1929 में निमोनिया हो जाने के कारण काकनि

बाई की मृत्यु हो गई। भंडारे की व्यवस्था बिगड़ने लगी। दो वर्ष बाद सन् 1931 में मीरपुर के श्री सामाणामला जी की पुत्री गंगा बाई के साथ संत कँवर ने लोगों के आग्रह से दूसरा विवाह किया। गंगा बाई भी श्रद्धा के साथ साधु–संतों की सेवा करती थी। गंगा बाई की कोख से तीन संतानें हुईं।

गरीबों, अनाथों और मोहताजों के कल्याण में अपने जीवन को समर्पित करने वाले कँवरराम ने अपने समस्त कार्यों को मात्र उपदेशों तक सीमित नहीं रखा है, वे अपने हाथों से काम करना पहली प्राथमिकता में रखते थे।

एक बार रहड़की में दरबार की सेवा का काम चल रहा था। कँवरराम भी सत्संगियों के साथ गारे की तगारी उठाकर सेवा में लगे थे, तभी उनके दर्शन करने दो स्नेही वहाँ आए। उन दोनों स्नेहियों ने पहले कभी कँवरराम को देखा ही नहीं था सिर्फ उनके बारे में नाम व बातें ही सुन रखी थीं। दरबार की सेवा में काम करने वालों से पूछते–पूछते एक सत्संगी से कँवरराम के बारे में पूछा तो इशारा करके उन्होंने बताया कि वे कँवरराम हैं। उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। वे विचार में पड़ गए। इतने में कँवरराम तगारी खाली कर वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने मेहमानों से पूछा, ''आपको क्या चाहिए?'' उन स्नेही मेहमानों ने कहा कि ''हमें कँवरराम जी के दर्शन करने हैं और यह आदमी हमसे मज़ाक कर रहा है कि आप ही संत कँवरराम हैं। भला कोई संत तगारी कैसे उठा सकते हैं?'' कँवरराम हँसकर बोले–''कँवर इस मिट्टी के पुतले का ही नाम है, दरबार की सेवा ही परमात्मा की सेवा है, जो बगैर तगारी उठाए कैसे पूरी हो सकती है। खैर! अब आप बताओ मेरे लिए क्या हुकुम है?'' आगंतुक कँवरराम की सादगी, सरलता, सहजता और विनम्रता देख दंग रह गए। वे पैरों में गिरकर आशीर्वाद की प्रार्थना करने लगे। उनकी संत प्रकृति के कारण ही आज भी उनका का नाम बड़े आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

एक बार की घटना है। संत कँवरराम सुबह शिकारपुर शहर के शाहीबाग में भजन में मग्न थे। अचानक एक महिला ने रेशमी कपड़े में लिपटे हुए अपने मृत बालक को संत के हाथों में देते हुए विनती की ''साईं कृपा कर इस बालक को लौरी दीजिए।'' लौरी देते समय ही उन्हें ज्ञात हुआ कि बालक में हरकत नहीं है। उन्होंने कपड़ा उठाकर देखा बालक जीवित नहीं है। संत बालक को लौरी देते हुए ईश्वर आराधना में लीन हो गए। कुछ देर पश्चात् आँखें खोली। बच्चा ऊँआ–ऊँआ करके रोने लगा। संत ने बच्चा माँ को देते हुए कहा–''माता ऐसी परीक्षा नहीं लिया करें।''

इस प्रकार की एक घटना सिंध के कुंभलेमन ग्राम में भजन सुनाते हुए घटी। भजन में हजारों की संख्या में हिंदू–मुसलमान उपस्थित थे। वर्षा हो रही थी जिसके कारण लोग परेशान होने लगे। एक जमींदार ने संत की शक्ति परखने के लिए हो रही वर्षा को बंद करने के लिए कहा। संत जैसे ही सोरठ राग गाने लगे, तो देखते ही देखते आसमान से बादल बिखरने लगे और आसमान साफ हो गया।

एक बार जेकवाबाद शहर में भजन करते समय एक श्रद्धालु ने सारंग राग गाने का अनुरोध किया। संत ने कहा, ''भाई सारंग राग से वर्षा होगी व आपको बहुत कष्ट होगा, भोजन व्यवस्था चौपट हो जाएगी।''

श्रद्धालु ने अपना आग्रह नहीं छोड़ा। इस पर संत ने सारंग राग गाना प्रारंभ किया। चारों ओर से उमड़–घुमड़ कर बादल आने लगे तभी मूसलाधार वर्षा होने लगी। लोगों ने प्रार्थना की और संत ने गाना बंद कर दिया।

इस प्रकार संत के चमत्कारों से सिंध का संपूर्ण समाज उनसे अधिक प्रभावित होता गया। संत कँवरराम का व्यक्तित्व और कृतित्व जीवन में प्रेरणास्पद रहा है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन गरीबों, अपाहिजों व विधवाओं की सेवा में लगा दिया। अनाथ और बेसहारा बालिकाओं की शादी करवाने के लिए जीवन पर्यंत सार्थक प्रयास किए। संत कँवरराम के उन्हीं भागीरथी प्रयासों का परिणाम है कि आज भी उनकी प्रेरणा से बड़ी संख्या में विद्यालय, अस्पताल, धर्मशालाएँ, विधवा विवाह और अनाथ बालक–बालिकाओं को संबलन देने के धर्मार्थ कार्य में हज़ारों लोग जुड़कर समाजोत्थान का कार्य कर रहे हैं।

संत कँवरराम के सतगुरु सतरामदास के स्वर्ग सिधारने के बाद वे अकेले ही समाजोत्थान के साथ सत्संग में लगे रहते। अपनी मधुर वाणी व भजनों से जन–जन में प्रेम–भक्ति का संदेश देते। उनके संगीतमय भजनों के माधुर्य के साथ–साथ पीड़ितों का दर्द भी बया होता था। उनकी आवाज़ पर हज़ारों लोग मोहित हो जाते थे। पैरों में घुंघरुओं की पायल, कानों में कुंडल, सर पर लाल जाफ़रानी रंग की पगड़ी, तन पर श्वेत जामा और कमर पर बाँधनी बांध कर संगीत की मस्ती में झूमने की छटा देखते ही बनती थी। संत कँवर राम को अपनी मृत्यु का आभास सात दिन पूर्व हो गया था। उन्होंने दादू में अपना अंतिम भजन मारू राग में समाप्त किया। मारू राग शोक के समय गाया जाता है। 1 नवम्बर, 1939 को संत अपनी टोली के साथ सक्खर जाने के लिए रुक स्टेशन पहुँचे। हमेशा की तरह डिब्बे में खिड़की के पास यात्रा के लिए बैठे। ज्यों ही इंजन ने सीटी बजाई कातिलों ने संत पर गोलियाँ चलाईं। एक गोली संत के माथे पर लगी। उनके मुँह से अंतिम शब्द निकला 'हरे राम।' 'हरे राम' की आवाज अनंत में विलीन हो गई। गाड़ी में हा–हाकार मच गया। गाड़ी दस मिनिट में आराई पहुँची तब तक संत के प्राण–पखेरू उड़ चुके थे। संत की अंतिम सात रातों को ''सात रातों'' के नाम से पुकारा जाता है। उनके भक्ति गीत हैं–

''राम सुमर प्रभात मेरे मन''

''नाले अलख जे बेड़ो तारि मुहिंजो''

कीअं रीझाया कीअ परिचायां

''या थियां हिंदु, पायां पेश जामो

या थियां मोमिन पढ़ा बुत खानो''

(कैसे रिझाऊं तुझे कैसे मनाऊँ तरीका कोई बताओ...

या तो बनूँ हिंदू पढ़ गीता

या तो बनूँ मोमिन पढ़ूँ कुरान शरीफ

हे ईश्वर मैं तुझे किस तरह मनाऊँ, प्रसन्न करूँ।)

संत के भजन आज भी विभिन्न शहरों, गाँवों एवं ढाणियों में प्रेम, एकता और सर्वधर्म सद्भाव का संदेश दे रहे हैं।

गोपीचंद सिंधी

शब्दार्थ

मोहताजों	–	जरूरत मंदों / लाचारों	बेड़ो	–	नैया / नाँव
कीअं	–	कैसे	तारि	–	पार
रीझाया	–	रीझाऊँ	मुहिंजो	–	पार लगा देना
परिचाया	–	मनाऊँ	अलख	–	ईश्वर
नाले	–	नाम के	कुहर	–	उबले हुए चने, मूँग व चावलों का मिश्रण
जामो	–	कपड़े	मोमिन	–	मुसलमान

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पाठ के अनुसार भारत विश्वगुरु किस कारण बना?
2. संत कँवरराम का जन्म कब हुआ?
3. संत कँवरराम की अंतिम सात रातों को किस नाम से पुकारा जाता है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. संत कँवरराम का जन्म हुआ था–

   (क) कराची में (ख) क्वेटा में
   (ग) जरवारन में (घ) शिकारपुर में ( )

2. अखंड भारत का प्रांत था–

   (क) सक्खर (ख) जरवारन
   (ग) काबुल (घ) सिंध ( )

3. संत कँवरराम अपना गुजारा करते थे–

   (क) भिक्षा से (ख) भजन करने से
   (ग) चने बेचकर (घ) परिश्रम करके ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. संत कँवरराम के माता–पिता का क्या नाम था?

2. संत कँवरराम ने गायन विद्या किससे सीखी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. संत कँवरराम ने अपना जीवन किन लोगों को समर्पित किया?
2. संत कँवरराम को दोनों आगंतुक क्यों नहीं पहचान पाए?
3. सद्गुरु सतराम दास के स्वर्गवास पश्चात् भी संत कँवरराम क्या करते रहे?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. अपनी भाषा में सरलार्थ कीजिए–

   कीअं रीझाया कीअ परिचायां
   या थिपा हिन्दु पायां पेश जायो
   या पिया मोमिन पढ़ा बुत खानो।

2. संत कँवरराम स्वावलंबी व्यक्ति थे, उदारण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. संत कँवरराम ने समाजोत्थान के कौन–कौनसे कार्य किए? वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1. ''मोहताजों के कल्याण के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया'' वाक्य में 'मोहताजों' उर्दू भाषा का शब्द आया है, जिसका अर्थ होता है 'लाचारों।' आप भी पाठ के आधार पर उर्दू शब्दों की सूची बनाकर अर्थ लिखिए।
2. पाठ में 'योगी–वैरागियों' शब्द आए हैं, योजक चिह्न का लोप होने पर योगी और वैरागी बनता है यह द्वंद्व समास का उदाहरण है। पाठ में आए द्वंद्व समास के अन्य उदाहरणों को छाँटकर विग्रह कीजिए।
3. पाठ में समाजोत्थान शब्द आया है, जिसका संधि विच्छेद समाज+उत्थान होता है। यह गुण संधि स्वर संधि का एक भेद है। स्वर संधि के प्रकारों को उदाहरण सहित लिखिए।

पाठ से आगे

1. संत कँवरराम के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? लिखिए।
2. संत कँवरराम का जीवन स्वावलंबन से ओत–प्रोत था। 'स्वच्छ भारत अभियान' भी हमें स्वावलंबन का संदेश देता है। आपने भी समाज में स्वावलंबन से पूर्ण कार्यों को होते देखा है। ऐसे कार्यों को सूचीबद्ध कर लिखिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''धर्म सचमुच बुद्धि ग्राह्य नहीं है, हृदय ग्राह्य है।''